संस्कृत विभाग
मूल्यांकन प्रतिवेदन

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है तथा विश्व की अनेक भाषाओं की जननी है। वेद हमारी सांस्कृतिक धरोहर है तथा इसी संस्कृत के कारण ही हम विश्व गुरु थे । प्राचीन काल में दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक देशों में संस्कृत राजभाषा के रूप में प्रयोग की जाती थी।
वर्तमान समय में संस्कृत की यह स्थिति है कि तकनीकी और प्रतियोगिता की दौड़ में सभी दौड़ रहे हैं और अपनी संस्कृति को विस्मृत करते जा रहे हैं। वर्तमान समय में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों की संख्या में भी कमी आई है। छात्रो को अपनी संस्कृति से जोड़ने का एकमात्र माध्यम संस्कृत है।
माता सुंदरी महाविद्यालय एवं संस्कृत विभाग अपनी ज्ञानवर्धिनी सभा के माध्यम से छात्रों के चतुर्दिक विकास में सदा से ही प्रयत्नशील रहा है। ज्ञानवर्धिनी सभा के माध्यम से संस्कृत विभाग का यह प्रयास रहता है कि छात्रों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ शोध परक ज्ञान भी हो जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके और साथ ही साथ वे अपनी संस्कृति को भी भली-भांति जान सके।

संस्कृत के प्रचार प्रसार में प्रयत्नरत संस्कृत विभाग के द्वारा विगत वर्षों में ऐसी अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इन प्रतियोगिताओं में श्लोकावृत्ति प्रतियोगिता,अक्षर श्लोकम प्रतियोगिता के माध्यम से छात्राओं में श्लोक को सस्वर व लयबद्ध ढंग से प्रस्तुतीकरण की कला का विकास हुआ। ये प्रतियोगिताएं अंतर्कक्षीय स्तर के साथ-साथ अंतर्महाविद्यालय स्तर पर भी आयोजित की गई जिससे अन्य महाविद्यालयों के छात्र छात्राओं के साथ समागम होने से छात्राओं को अपनी प्रतिभा को निखारने का अवसर प्राप्त हुआ।
इसी प्रकार संस्कृत गीतम् प्रतियोगिता के माध्यम से छात्राओं को संस्कृत में गीत गाने का अवसर प्राप्त हुआ जिससे उनमें गायन कला का विकास हुआ। इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त संस्कृत चित्र कर्म प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने श्लोक को चित्र के रूप में अंकित करने का प्रयास किया। छात्राओं ने श्लोक का भाव समझ कर के उसी भाव को चित्र के रूप में चित्रित किया।

इन प्रतियोगिताओं का लक्ष्य था कि छात्राओं में कलात्मक आधार पर ज्ञान वर्धन हो और छात्राएं इस लक्ष्य में सफल भी रही।

बौद्धिक आधार पर भी ज्ञान वर्धन करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें संस्कृत प्रश्न मंच प्रतियोगिता ,भाषण प्रतियोगिता उल्लेखनीय है। प्रश्न मंच प्रतियोगिता के द्वारा छात्राओं का सामान्य ज्ञान वर्धन हुआ जो कि भविष्य में प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सहायक हो सकता है।

संस्कृत भाषा में धाराप्रवाह में बोलने हेतु संस्कृत भाषण प्रतियोगिता तथा संस्कृत वार्ता प्रतियोगिता का भी आयोजन विभाग के द्वारा किया गया ।ये दोनों ही प्रतियोगिताएं अंतर्महाविद्यालयी थी जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के 15 से अधिक महाविद्यालयों ने भाग लिया। वार्ता प्रतियोगिता के माध्यम से छात्राओं ने धारा प्रवाह में वार्तालाप करके सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इन दोनों ही प्रतियोगिताओं का यह उद्देश्य था कि छात्र न केवल हिंदी व अंग्रेजी भाषा बोले बल्कि वे देव भाषा से भी भलीभांति अवगत हो और उसको भी अपने विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम बनाएं।

विगत कई वर्षों से संस्कृत विभाग कुछ प्रसिद्ध संस्थाओं के साथ मिलकर उनके संयुक्त तत्वावधान में प्रतियोगिताओं का आयोजन करता आ रहा है। इनमें दिल्ली संस्कृत संस्थान ,संस्कृत भारती आदि संस्थाएं प्रमुख है। दिल्ली संस्कृत संस्थान एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एकांकी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन महाविद्यालय के प्रेक्षागृह में हुआ जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के 16 महाविद्यालयों ने भाग लिया । इसमें समाज की कुछ ज्वलंत समस्याओं पर अपने भावपूर्ण अभिनय के द्वारा छात्राओं ने सभी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया । इस प्रकार छात्राओं में अभिनय क्षमता का भी विकास हुआ। माता सुंदरी महाविद्यालय की छात्राओं ने रैगिंग की समस्या पर अपना भावपूर्ण अभिनय किया।

संस्कृत भारती एवं माता सुंदरी महाविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में 15 दिवसीय संस्कृत संभाषण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिससे 15 दिनों तक छात्राओं ने संस्कृत संभाषण विषयक ज्ञान प्राप्त किया। इस कार्यशाला के द्वारा छात्राओं को ना केवल व्याकरणात्मक ज्ञान हुआ अपितु उनके संस्कृत शब्दकोश में वृद्धि हुई। वाक्य निर्माण कला का भी कौशल उनमें विकसित हुआ जिसके फलस्वरूप संस्कृत में धाराप्रवाह में वार्तालाप करने में उन्होंने अपना वाकचातुर्य दिखाया।

स्वच्छता अभियान के तहत समाज में जागरूकता लाने हेतु विभाग की छात्राओं के द्वारा नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने झुग्गियों में ,दलित बस्तियों में जाकर के वहां के लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया उन्हें स्वच्छता का महत्व बताया।समाज में जागरूकता लाने हेतु भी

संस्कृत छात्राओं का प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के द्वारा छात्राओं का यह प्रयास बहुत सराहा गया और उनकी तरफ से छात्राओं को इनाम धनराशि भी प्रदान की गई।

संस्कृत विभाग समय-समय पर अनेक विषय -वेत्ताओं को आमंत्रित करता रहा है। इसके माध्यम से विभाग का यह लक्ष्य रहा है कि उनके विषयगत अभिभाषण के द्वारा छात्राओं का ज्ञान वर्धन हो तथा वे रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारियां एकत्रित कर सकें। इस श्रृंखला में अनेक विषयविद् जैसे डॉ शारदा शर्मा ,डॉ सुधीर आर्य , डॉ आनंद वर्धन सदृश विद्वानों ने विषयगत महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करके एवं अनेक रोचक तथ्यों से छात्रों का ज्ञान वर्धन करके सभी को अभिभूत कर दिया ।इस अभिभाषण में संस्कृत विभाग के अतिरिक्त अन्य विभागों ने भी अपनी रुचि दिखाई और मंत्र-मुग्ध होकर के अभिभाषण को सुना और ज्ञानवर्धन किया।

संस्कृत विभाग के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।इस अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में मुख्य अतिथि मास्को विश्वविद्यालय की प्रो.युजीनिया वेनिना थी। उन्होंने रूस में नारी स्थिति विषयक विभिन्न तथ्यो को प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला में महाविद्यालय के सभी विभागों ने अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई। उनके व्याख्यान को ना केवल छात्राओं ने ध्यान पूर्वक सुना बल्कि संस्कृत विभाग व उर्दू विभागकी छात्राओं ने नारी की स्थिति पर अपने प्रपत्र को भी प्रस्तुत किया। जिसके फलस्वरूप परस्पर दोनों संस्कृतियों का आदान प्रदान हुआ। इस कार्यशाला का अत्यंत सकारात्मक प्रभाव छात्रों पर दिखाई दिया।इससे उनका ज्ञान वर्धन तो हुआ साथ-साथ शोध परक प्रवृत्ति भी उनमें विकसित हुई।

संस्कृत विभाग में समसामयिक कार्यक्रम भी होते रहते हैं । 21 फरवरी को प्रतिवर्ष मातृभाषा दिवस का आयोजन होता है जिसमें छात्राऐ भाषा गत अपने विचारों को प्रस्तुत करती हैं। विभिन्न भाषाओं के शब्दों में किस प्रकार से साम्य है उन शब्दों की सूची बनाकर उसे प्रस्तुत किया।इस कार्यक्रम के द्वारा छात्राओं के शब्दकोश में बढ़ोतरी के साथ साथ भाषिक ज्ञान में भी बढ़ोतरी हुई।

संस्कृत विभाग के द्वारा करियर काउंसलिंग सत्र का भी आयोजन किया गया जिसमे स्टिफेंस महाविद्यालय के प्रोफेसर डा.पंकज कुमार मिश्र ने संस्कृत में रोजगार विषयक विभिन्न संभावनाओं पर एक विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया जिससे छात्राओं को यह भली-भांति ज्ञात हुआ कि संस्कृत का छात्र किन-किन क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकता है ? छात्राएं और अधिक आश्वस्त हो गई कि संस्कृत के छात्रो का भविष्य अनिश्चित नहीं है । वे अनेक क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकते है।

विभाग में प्रतिवर्ष समावृत छात्र सम्मेलन का भी आयोजन होता है जिसमें संस्कृत के सभी भूतपूर्व छात्र जो अब विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं बे अपने अनुभवों को छात्राओं के साथ साझा करते हैं। अपने अनुभवों के आधार पर वे छात्राओं का मार्गदर्शन भी करती हैं।
ज्ञानार्जन के लिए संस्कृत विभाग छात्राओं को महाविद्यालय परिसर के बाहर शैक्षणिक यात्रा हेतु ले जाता है। विगत वर्षों में विभाग छात्राओं को इंदिरा गांधी सांस्कृतिक शोध संस्थान, महरौली आदि स्थानों पर शैक्षिक यात्रा हेतु ले गया। इंदिरा गांधी शोध संस्थान जाकर छात्राओ ने वहां की संग्रहालय में प्राचीनतम पांडुलिपियों को देखा। उन्होंने यह भी जाना कि अत्यंत प्राचीन पांडुलिपियों को किस प्रकार सुरक्षित रखा जाता है।इसकी विभिन्न विधियों से अवगत हुए।

महरौली शैक्षणिक यात्रा के दौरान छात्राओं ने ऐतिहासिक धरोहर को देखा। उसकी ऐतिहासिकता का ज्ञान हुआ। इसके साथ ही महरौली अभिलेख का भी अत्यंत गंभीरता से अध्ययन किया। यह छात्रों का विषय क्षेत्र था इस कारण इसके अध्ययन में उन्होंने और अधिक रुचि दिखाई।
गत वर्ष जब हम सभी महामारी के दौर से गुजर रहे थे। ऐसे समय में भी संस्कृत विभाग सक्रिय था। विभाग के द्वारा वेबिनार का आयोजन कराया गया। इस वेबिनार की मुख्य वक्तृ प्रो. शशि तिवारी थी। जिन्होंने “संतुलन ही है जीने की कला” विषय पर अपना विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। जिससे सभी छात्राओं ने जीवन में संतुलन के महत्व को समझा। विषय से संबद्ध होने के कारण छात्रों ने इस विषय के प्रति और भी अधिक रुचि दिखाई और ज्ञान अर्जन किया।

छात्रों में शोध प्रवृत्ति को विकसित करने हेतु विभाग के द्वारा एक शोध सत्र का आयोजन किया गया जिसका विषय था "लुप्त प्राय रीति रिवाज एवं मान्यताएं"। भारतीय समाज में भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न मान्यताएं रीति रिवाज ब परंपराएं विद्यमान है ।
इनमें से अनेक किन्ही कारणों से धीरे धीरे लुप्त होने की ओर अग्रसर है।इसी विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए छात्राओं ने प्राचीन काल में होने वाली पशु पूजा, प्रकृति पूजा, विवाह में होने वाले अनेक रीति रिवाज, राजस्थान के अनेक नृत्य व परंपराएं आदि को छात्राओं ने अपने शोध का विषय बनाया और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपने शोध पत्र का प्रस्तुतीकरण किया। बहु विषयक होने के कारण इस कार्यक्रम में पंजाबी व उर्दू विभाग ने भी हिस्सा लिया और उनकी छात्राओं के द्वारा भी शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। इससे छात्राओं में न केवल अपने विषय से संबंधित ज्ञान वर्धन हुआ साथ ही साथ दूसरे विषयों का भी ज्ञान हुआ और उनकी परंपराओं से भी अवगत हुए।

पियर मेंटरिंग या सहकर्मी सलाह कार्यक्रम का भी आयोजन विभाग में होता रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत बी. ए. तृतीय वर्ष की छात्राएं प्रथम व द्वितीय वर्ष की छात्राओं का विषय गत मार्गदर्शन करती हैं। इससे छात्राओं का न केवल ज्ञान वर्धन होता है अपितु छात्राओं में आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

इन सभी कार्यक्रमों के पीछे प्रेरणा स्रोत महाविद्यालय की प्रधानाचार्या **प्रो. हरप्रीत कौर** हैं। जिनकी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन के फलस्वरुप कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न होते हैं। महाविद्यालय व छात्राओं का चतुर्दिक विकास ही उनका परम लक्ष्य है जिसको ध्यान में रखकर वे निरंतर नवीन कार्यक्रमों के द्वारा छात्राओं के विकास हेतु प्रोत्साहित करती रहती है।